काल सर्प योगः कारण एवं निवारण

Kalsarpa Yoga : Causes and Solution

जब जन्म कुण्डली में राहु या केतु के मध्य समस्त ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प योग कहलाता है।

हमारे नक्षत्र मण्डल में सात ग्रहों का प्रत्यक्ष रूप से भौतिक आस्तित्व है, लेकिन राहु-केतु का कोई भौतिक आस्तित्व नहीं है। यही कारण है कि इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार राहु के पिता विपुचिति दानव थे और माता दानवराज हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका थी। समुद्र-मंथन के उपरान्त प्राप्त अमृत का छलपूर्वक पान करने के कारण भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से राहु का शिर काट दिया था, लेकिन चूंकि उसने अमृत पान कर लिया था इसलिए वह अमर हो गया । विवशतावश भगवान ने उस दानव के कटे शिर को राहु एवं धड़ को केतु के रूप में नौ ग्रहों में स्थान प्रदान किया।

यदि फलित ज्योतिष के अनुसार देखा जाये तो नैसर्गिक रूप से राहु और केतु, सूर्य और चन्द्रमा के शत्रु हैं। बुध, शुक्र और शनि राहु के मित्र हैं, जबकि गुरू सम तथा मंगल शत्रु हैं। इसी प्रकार केतु के मित्र हैं- शुक्र और मंगल । बुध और गुरू सम है और शनि इसके शत्रु हैं। कन्या राहु की उच्च राशि है और मिथुन में २० अंश का परमोच्च तथा धनु में २० अंश का परम नीच होता है। केतु की स्वराशि मीन है और यह धनु में ६ अंश का परमोच्च और मिथुन में ६ अंश का परमनीच होता है। अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु की सातवीं दृष्टि नहीं होती, केवल पांचवी और नवीं दृष्टि होती है।

राहु-केतु की गति शूद्र, दिशा नैर्ऋत्य, पंचधातु, तमोगुणी, कषाय-रस, क्रमशः काला एवं धब्बेदार मिश्रित रंग माना गया है। राहु का रत्न गोमेद और केतु का रत्न लहसुनिया है।

राहु का प्रभाव शनि देवता के समान है, और इनका आघात एवं प्रहार अचूक एवं महाभयानक होता है।

राहु ग्रह घमंड, राजनीति, तस्करी, षड़यंत्र, शिकार, शराब, अपहरण, कुतर्क, दादागिरी, देश-निकाला, सर्प, हवा, मैथुन, म्लेच्छ, परनिंदा, कपट, गांजा-भांग, अफीम, सिगरेट, विद्रोह, दुर्गुण, मजदूर, सफाई, पैथोलोजिस्ट,

गोबर, श्मशान, कर्मचारी, उल्टी, विषजन्यरोग, आदि का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि केतु ग्रह जादू-टोना, इन्द्रजाल, चमत्कारी कार्य, गड़ा हुआ धन, अचानक भाग्योदय, वेद-शास्त्रों का अधिनायक, चर्म रोग, गुप्त बल, वर्णशंकर, भूख से उत्पन्न कष्ट, दादी, नाना, सौतेला पिता, दत्तक पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

इन दोनों छाया-ग्रहों का अपना प्रभाव नहीं होता बल्कि ये जिस ग्रह के साथ होते हैं उसी के स्वभाव के अनुसार फल प्रदान करते हैं। अकेले होने पर जिस ग्रह की राशि में होते हैं, उसी ग्रह का फल प्रदान करते हैं।

कालसर्प योग का प्रभावः-

काल सर्प योग से प्रभावित जातक को अनेक प्रकार की मुसीबतें , कष्ट, अपमान, झेलने पड़ते हैं। वास्तविकता यह है कि ऐसे लोग जीवन तो जी रहे होते हैं, लेकिन अपने लिए नहीं बल्कि केवल दूसरों के लिए। ऐसे लोगों को हमेशा शारिरिक कष्ट लगा रहता है। पढाई में रूकावट, पैसे की बरबादी, विश्वासघात और गलत फहमी आदि होना इसकी पहचान मानी जाती है। इस योग के कारण अन्य खूब अच्छे-२ योग भी अपना पूर्ण फल प्रदान नहीं कर पाते। इस योग से प्रभावित जातक सदैव परेशान ही रहता है। उसकी विद्या-प्राप्ति में रूकावटें आती हैं, उसे शारिरिक कष्ट लगा रहता है, उसने जो विद्या प्राप्त की है, उसका समुचित उपयोग नही होता है।वह गलतफहमी का शिकार रहता है, उसके पैसे की बरबादी होती है और यहां तक भी होता है कि कभी-२ उसके पास पैसे का अम्बार लग जाता है, लेकिन कभी-२ वह एक रूपये के लिए भी मोहताज हो जाता है। उसे घर से बाहर रहना पड़ता है, मानसिक अशांति से जूझना पड़ता है , उसे धन-प्राप्ति नहीं होती, संतान की प्राप्ति उसे दूर का ख्वाब लगती है और उसका गृहस्थ जीवन भी कलह-युक्त हो जाता है।

- इस योग से प्रभावित जातक को निरंतर बुरे स्वप्न आते हैं और स्वप्न में सर्प दिखायी देते हैं। अकाल मृत्यु का डर, अथवा कुछ अशुभ होने की आशांका मन में समाई रहती है। ऐसा जातक पूरा मन लगाकर कार्य करता है परन्तु उसका फल उसे प्राप्त नहीं होता। वह जो भी कार्य

करता है, उसका परिणाम उसे प्राप्त नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत देर से होता है । उसे जो पद-प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए वह उसे नहीं मिलती और उसका श्रेय दूसरे ले जाते हैं। सामान्यतः ऐसे जातकों को मिलने वाले परिणाम निम्नवत् हो सकते हैं:-

- भाई-बंधु रिश्तेदार आदि धोखा देते हैं। भाईयों का सुख नहीं मिलता ।
- पत्नी को बार-बार गर्भ गिरने की समस्या आती है।
- ऐसा जातक आजीवन संघर्षरत रहता है। उसका भाग्य साथ नहीं देता।
- दैहिक एवं मानसिक कष्ट भोगने पड़ते हैं, स्वास्थय साथ नहीं देता।
- कार्य व्यवसाय में दिवाला निकल जाता है अथवा भारी क्षति उठानी पड़ती है।
- ऐसे जातकों की पैत्रिक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है अथवा उसे ऐसी सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाता है।
- घर में अकाल मृत्यु होती रहती है।
- संतान कष्ट होता है या फिर संतान का विवाह उचित समय पर नहीं होता है।
- अदालतों या थानों के चक्कर लगाने पड़ते है।
- ग्रह-क्लेश अथवा घर में कलह होती रहती है।
- पत्नी या पति अनुकूल नहीं मिलता।
- नौकरी अथवा व्यवसाय में बार-बार असफलता हाथ लगती है।
- मन अशांत रहता है और अज्ञात भय बना रहता है।
- संचित धन-सम्पदा का अचानक समाप्त हो जाना ।

- संतान सुख से असंतुष्टि, उनकी शिक्षा में बाधा आना अथवा संतान का जिद्दी एवं अनियंत्रित होना ।
- जल, नदी, तालाब आदि को देखकर भय लगना ।
- स्वयं के साथ दुर्घटनाएं घटित होना ।
- वायवी शक्तियों, शत्रुओं द्वारा किये गये अभिचार कर्मों से पीड़ित होना।

काल-सर्प योग क्या है:-

पृथ्वी की दो प्रकार की गतियां होती हैं- दैनिक गति, जिसे परिभ्रमण एवं वार्षिक गति, जिसे परिक्रमण कहा जाता है। पृथ्वी का सूर्य की ओर घूमने का मार्ग तथा चन्द्र का पृथ्वी के चारों ओर घूमने का मार्ग अलग-अलग हैं। जंहा ये एक दूसरे को क्रास करते हैं, उसी छाया को राहु व केतु कहा जाता है। राहु व केतु की अपनी कोई राशि नहीं होती। राहु का जन्म नक्षत्र भरणी और केतु का आश्लेषा कहा गया है। भरणी का देवता काल व आश्लेषा का देवता सर्प हैं। इन्ही काल व सर्प के मिलने से 'कालसर्प योग' नामक योग उत्पन्न होता है। सर्प का मुख राहु तथा पूंछ केतु हैं।

कुण्डली में समस्त ग्रह एक भाव में आ सकते हैं लेकिन राहु व केतु कभी एक भाव में नहीं आ सकते। वे सदैव एक दूसरे से सातवे भाव अर्थात १८० अंश पर ही रहते है। यही कारण है कि सर्प के सिर वाले भाग को राहु व धड़ वाले भाग को केतु की संज्ञा दी जाती है।

राहु नागलोक का प्रतिनिधित्व करता है। जातक की मृत्यु होने के उपरान्त यदि उसकी वासना परिवार में ही अटकी रहती है तो वह नाग योनि में ही रहता है। वासनाओं के कारण जब उसका पुनः जन्म होगा तो उसकी कुण्डली में काल-सर्प योग होगा। इसके अतिरिक्त ज्योतिषिय ग्रंथो में अनेक प्रकार के शापों का वर्णन आता है, जिनमें- पूर्वजन्मकृत पितृशाप, गुरूशाप, पत्नीशाप, प्रेतशाप, सर्पशाप आदि प्रमुख हैं। जो जातक सर्पशाप से ग्रसित होता है, उसकी कुंडली में कालसर्प योग होता है।

- सामान्यतः करीब ५७६ प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं, लेकिन यदि शनि से सम्बन्ध बनाकर पुष्टि करें तो हजारों प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं। मुख्यतः यह योग दो प्रकार से बनता है। राहु के मुख की ओर से समस्त ग्रह आएं तो सम्मुख कालसर्प योग और राहु के दांयी ओर से समस्त ग्रह आएं तो उसे विपरीत काल सर्प योग कहा जाता है। इन्हे उदित एवं अनुदित भी कहा जाता है। उदित कालसर्प योग मुख की ओर से बनता है, जो बहुत कष्टप्रद होता है क्योंकि राहु सदैव वक्री होता है। इसकी अपेक्षा अनुदित कालसर्प योग कम कष्ट देने वाला होता है।

जब कोई ग्रह राहु केतु के साथ हो और राहु से कम अंशों पर हो तो वह कालसर्प योग कष्टदायक होता है, लेकिन यदि राहु से अधिक अंशों पर स्थित ग्रह साथ हो तो वह कालसर्प भंग योग की श्रेणी में आकर कम कष्टदायी हो जाता है।

कालसर्प योग को अशुभ योग माना जाता है लेकिन ऐसा नहीं है। कभी-कभी ऐसा योग जातक को बुलंदियों पर भी पहुंचा देता है। पं० जवाहरलाल नेहरू, सम्राट अकबर, राजीव गांधी, सचिन तेंदुलकर आदि इसके उदाहरण हैं। परन्तु यह योग कितना शुभ होगा और कितना अशुभ होगा, इसकी गणना जातक की कुंडली के गहन अध्ययन से ही संभव है।

वास्तविकता यह है कि ६० प्रतिशत व्यक्ति कालसर्प योग से प्रभावित होते हैं । जिनके भी जन्मांग में यह योग होता है उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट, अपमान, मुसीबतें सहने पड़ते हैं। एक इस योग के कारण दूसरे अनेक अच्छे योग भी अपना फल प्रदान नहीं कर पाते हैं।

कालसर्प योग के उपाय

१. राहु केतु के मंत्रों का जप करें -

राहु-मंत्रः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः ।

केतु-मंत्रः ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतुवे नमः ।

२. शिवलिंग पर चांदी के नाग व नागिन का जोड़ा चढांए ।

३. कालसर्प यंत्र के सामने ४३ दिनों तक सरसों के तेल का दीपक जलाकर - 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का यथाशक्ति जप करें। पूजन में मिश्री तथा चन्दन का उपयोग करना चाहिए। इसमें रोली, या सिंदूर का प्रयोग नहीं किया जाता । इसके साथ-साथ महामृत्युंजय मंत्र -

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

का भी जप करना चाहिए।

४. महामृत्युंजय अनुष्ठान किसी योग्य ब्राह्मण से कराएं।

५. भगवान विष्णु या शिवजी का पूजन अवश्य करें।

६. एक वर्ष तक नवनाग स्तोत्र का पाठ करें, जो निम्नवत हैः-

<u>नवनाग-स्तोत्र</u>

अनन्तम् वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कंबलम्।
शंखपालं धार्तराष्ट्र तक्षकं कालियं तथा।।
एतानि नव नामानि नागानाम् च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।।
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

७. कालसर्प योग की शान्ति का सबसे सरल और प्रभावी उपाय यह है कि अपने घर और कार्यालय में मोर पंख रखें और सुबह-शाम उसे अपने शरीर पर स्पर्श करायें।

8. एक रेंगते हुए डिजाईन का चांदी का सर्प बनवाकर उसके फनपर गोमेद तथा पूंछ में लहसुनिया रत्न जड़वाकर नागपंचमी, अमावस्या अथवा शिवरात्रि के दिन 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करते हुए नाग को नदी में प्रवाहित कर दें।

9. नाग-प्रतिमा की अंगूठी धारण करें।

10. शिवरात्रि, नागपंचमी या सोमवार को नाग-नागिन का जोड़ा बनवाकर शिवलिंग पर चढायें। इसके बाद सर्प सूक्त का पाठ एवं 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र की एक माला जप करके इस जोड़े को नदी में विसर्जित कर दें।

11. १०८ दिनों तक हनुमान चालीसा का पाठ करें।
12. रात्रि में सोते समय जौं के कुछ दाने अपने सिरहाने रखकर प्रातः पौं फटने के समय उन्हें पक्षियों को खिलाएं ।
13. यदि व्यक्ति समर्थ हो तो नाग मन्दिर का निर्माण कराये और उसमें नागदेव की पत्थर की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठित स्थापना कराये।
14. बुधवार के दिन एक मुठ्ठी काले उड़द लेकर किसी काले कपड़े में बांधकर उस पर राहु-मंत्र का यथाशक्ति जप करके किसी चाण्डाल को दक्षिणा सहित दान करें या फिर उसे किसी नदी में प्रवाहित कर दें। यह क्रिया लगातार ७२ दिनों तक करनी होती है। इससे निश्चित ही कालसर्प का प्रभाव दूर हो जाता है।
15. श्री कार्तवीर्याजुन मंत्र का ३३-३३ हजार जप का अनुष्ठान १० बार कराने से कालसर्प योग का दुष्प्रभाव दूर होकर राजयोग के समान भाग्यवर्धक शुभ प्रभाव मिलने लगता है और जातक राजयोग का लाभ प्राप्त करता है।
16. कालसर्प योग शांति यंत्र के समक्ष नित्य प्रति नवनाग स्तोत्र एवं सर्प-सूक्त का पाठ करना चाहिए। सर्प-सूक्त निम्नवत् हैः-

ब्रह्म लोकेषु ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः वासुकि प्रमुखादयः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
कद्रवेयाश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणा ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः लक्षका प्रमुखादयः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
सत्यलोकेषु ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटक प्रमुखादयाः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।

पृथिव्यांचैव ये सर्पा ये साकेत वासिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसंतिषु संच्छिता।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाप्रचरन्ति च ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
समुद्रतीरे ये सर्पाये सर्पाजलवासिनः ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
रसांतलेषु ये सर्पाः अनन्तादि महाबला।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।

.....

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and

yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. **Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

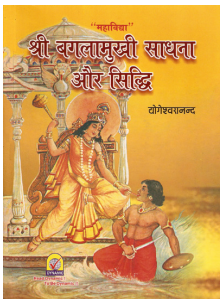

2. **Mantra Sadhna**

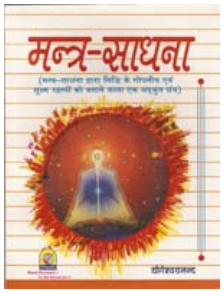

3. **Shodashi Mahavidya**